पेरिस
नवम्बर ०५, २००८

सन्देश संख्या १५५

पत्रकारों के लिए लघु आलेख

(गोपी जी का सुझाव था कि पत्रकारों के लिए कार्यक्रम से पूर्व ही एक लघु आलेख तैयार कर लिया जाय ताकि कहीं भी जब शिवेन्दु का कार्यक्रम हो तब उसे प्रेस विज्ञप्ति के रूप में प्रेषित किया जा सके । आवश्यकतानुसार, क्षेत्रीय–भाषाओं में इसका अनुवाद किया जा सकता है ।)

क्रियायोग द्वारा अद्वैत–प्रज्ञा की समझदारी में साझेदारी हेतु आमन्त्रण

१. प्रारम्भ (प्रथम दिवस) : स्वाध्याय : सांख्य का सार –

मानव–चित्तवृत्ति सांस्कृतिक निवेशों और मानसिक अनुबन्धनों से निर्मित है । इस चित्तवृत्ति को ही हम अपनी चेतना मानते हैं । इस चित्तवृत्ति का कोई भी भाग इसके अवयवों के जाल से बाहर नहीं है । फिर भी, इसी चित्तवृत्ति में और इसी से झूठे विखण्डन अर्थात् मिथ्या विभाजन द्वारा एक भ्रांति उत्पन्न होती है जिसे ''मैं'' कहा जाता है । यह ''मैं'' अर्थात् भ्रान्ति भी उन्हीं अवयवों, उन्हीं बाध्यताओं, उन्हीं मतों एवं उन्हीं विचारों से निर्मित है जिनसे इसे उत्पन्न करने वाली चित्तवृत्ति बनी होती है । अतः यहाँ द्वैत यानी कि दो नहीं है । द्वैत स्वर्ग में मिथ्या एवं भ्रामक है । किन्तु इस ''मैं'' को ही स्वर्ग में ईश्वर से मिलने हेतु या धरती पर पुनः पुनः जन्म लेने हेतु प्रतीक्षारत 'आत्मा' मान लिया जाता है । अतीत के पूर्वाग्रहों एवं भ्रांतियों का दबाव इस मिथ्या द्वैत को मजबूती प्रदान करता है । यह मिथ्या द्वैत ही मानव सम्बन्धों के प्रत्येक स्तर पर द्वन्द्व, पीड़ा, संताप एवं दुःखभोग का कारण है । लाहिड़ी की दीक्षा पूर्व प्रारम्भिक वार्ता अन्तर्दृष्टि प्रदान करने वाली होती है । इस वार्ता में, हमेशा ही मानव–चित्तवृत्ति के आन्तरिक आयाम का अद्भुत उद्घाटन होता है । अतिशय प्रेम एवं करूणावश, सबसे वार्ता हेतु सम्पूर्ण विश्व में भ्रमणशील इस गृहस्थ योगी के साथ मानवता की प्राचीन प्रज्ञा की इस निःशुल्क साझेदारी में आपका स्वागत है ।

प्रश्नोत्तर–सत्र के साथ इस वार्ता में लगभग दो घंटे लगते हैं । इसका आयोजन (स्थान) में दिनांक (............................) को (समय) बजे से किया गया है ।

२. प्रथम चरण (द्वितीय दिवस) : तप योग का सार –

यह दीक्षा का अनुष्ठान है, तदापि यह कोई कृत्य नहीं है, और न ही यह कोई सूचना है, अथवा उधारी ज्ञान है, अपितु यह मौलिक परिवर्तन की सशक्त वैज्ञानिक प्रविधि है । इससे ''मैं'' का सतही एवं बाहरी परिष्करण नहीं होता, अपितु, अहंभाव से पूर्ण मुक्ति मिल जाती है और चैतन्य यानी कि विकल्परहित सजगता अर्थात् चित्तवृत्तिरहित शुद्ध चेतना, का जागरण हो जाता है । इसमें मौलिक क्रियायें बताई जाती हैं जो बाबाजी एवं लाहिड़ी महाशय से पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होती आई हैं । ये क्रियायें प्रत्यक्षबोध की शुद्ध क्रियायें हैं न कि विभेदकारी चित्त ''मैं'' की गतिविधियाँ। शिवेन्दु या उनके पूर्वजों ने कोई संस्था नहीं बनायी है । उनके भक्तों की भी कोई संस्था नहीं है, फिर भी अपने जीवन में वे अत्यन्त अनुशासित एवं व्यवस्थित हैं । क्रियायोग का कार्यक्रम शारीरिक कसरत का कार्यक्रम नहीं है । इसमें सरल क्रियायें बताई जाती हैं जिनके अभ्यास से शरीर मानसिक प्रदूषणों की गलाघोंटू पकड़ से मुक्त हो जाता है तथा समता (स्थित प्रज्ञता) की ऊर्जा उत्पन्न होती है । यह 'वियोग' अर्थात् विभेदकारी चित्त 'मैं' से मुक्ति है और वही 'योग' अर्थात् चैतन्य का उदय है जो चित्तवृत्ति की गतिविधियों में मनुष्य की लिप्तता के कारण सुप्तावस्था में
पड़ा रहता है । दीक्षा–सत्र में दीक्षार्थियों की संख्या के आधार पर ३ से ५ घंटे लगते हैं ।

३. अंतिम चरण (तृतीय दिवस) : ईश्वर प्रणिधान अर्थात् शुद्ध मानव–चेतना की पूर्णता का बोध : अद्वैत वेदान्त का सार यह स्थितप्रज्ञता की ऊर्जा का दृढ़ीकरण–सत्र है जिसमें अष्टांग–योग को विस्तारपूर्वक बताया जाता है एवं प्रथम चरण में बतायी गई क्रियाओं का पुनरावलोकन होता है । इसमें मनुष्य जाति के अन्तर्जगत के अद्वैत आयाम एवं बहिर्जगत के व्यावहारिक द्वैतपूर्ण आयाम में भेद की समझदारी घटित होती है ।

यह पुनरावलोकन सत्र भी ३ से ५ घंटे तक चलता है । दीक्षा–कार्यक्रम में वे ही लोग भाग ले सकते हैं जिन्होंने दीक्षा–पूर्व सार्वजनिक वार्ता में भाग लिया है ।

यह दीक्षा–कार्यक्रम .... (तिथि) को .... (समय) बजे से .... (स्थान) पर आयोजित किया जा रहा है ।

पुनः केवल दीक्षित लोग ही पुनरावलोकन–सत्र में भाग ले सकते हैं । और जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र इस प्रकार हैं –

श्री.................................... टेलिफोन ....

या

श्री.................................... टेलिफोन ....

या

ई–मेल :